वसंत जमशेदपुरी

ग़ज़ल

हमें आपसे दिल लगाने का मन है
किसी रोज़ घर पर बुलाने का मन है

सफ़ीना है छोटा है पतवार टूटी
बहर के मगर पार जाने का मन है

कही जो ग़ज़ल तेरी जुल्फों पे मैंने
सरे शाम उसको सुनाने का मन है

दिए ज़ख़्म जिसने मुहब्बत में या रब
उसे अपना दिलबर बनाने का मन है

अँधेरा बहुत नफ़रतों ने है बाँटा
मुहब्बत के दीपक जलाने का मन है

कोई खड़ा है गीता कोई कुरान ले कर
आता नहीं है कोई रोटी-मकान ले कर

नफरत की आँधियों में बहको न मेरे यारो
जलता है दूध ही तो आखिर उफान ले कर

गर मखमली हो बिस्तर फिर भी न नींद आए
तुम क्या करोगे बोलो सारा जहान ले कर

दहकान क्या करे जब ये दौर है मशीनी
जलती है अब पराली तीखे बयान ले कर

हैं प्यार के पुजारी दिल में हमें बसा लो
आए हैं दर तुम्हारे शीरी ज़बान ले कर